तिरुच्चि दर्पण

திருச்சி தர்பண் TIRUCHY DARPAN

अंक : 5
2022 जनवरी

இதழ் : 5
2022 ஜனவரி

ISSUE : 5
2022 January

सीमा शुल्क मुख्य आयुक्त (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि
नं 1 विल्लियम्स रोड, कन्टोनमेंट, तिरुच्चिराप्पल्लि 620 001

CHIEF COMMISSIONER OF CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE,
NO.1, WILLIAMS ROAD, CANTONMENT, TIRUCHIRAPPALLI 620 001

मुख्य आयुक्त, डॉ. उमा शंकर द्वारा सीमा शुल्क सुविधा केन्द्र का उद्घाटन

तिरुचि दर्पण

திருச்சி தர்பண் TIRUCHY DARPAN

सीमा शुल्क (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि

CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE, TIRUCHIRAPPALLI

अंक : 5 2022 जनवरी	இதழ் : 5 2022 ஜனவரி	ISSUE : 5 2022 January

பொறையொருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறையொருங்கு நேர்வது நாடு – திருவள்ளுவர்

एक साथ जब आ पड़े, जब भी सह सब भार ।
देता जो राजस्व सब, है वह राष्ट्र अपार ।।

तिरुवल्लुवर

(हिन्दी अनुवाद – मु.गो. वेंकटकृष्णन)

प्रधान संपादक डॉ उमा शंकर मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि प्रबंध संपादक	**Editor-in-Chief** Dr. **Uma Shanker** Chief Commissioner, Customs (Preventive)Zone Tiruchirappalli
प्रबंध संपादक **श्री डी. अनिल** आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि **श्री दिनेश के चक्रवर्ती,** आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि	**Managing Editor** Shri **D. Anil** Commissioner, Customs (Preventive), Trichy Shri. **Dinesh K. Chakravarthy** Commissioner, Custom House Tuticorin

संपादक दल

सर्वश्री / श्रीमती

डॉ उमा शंकर	मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रधान संपादक
डी. अनिल	आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रबंध संपादक
दिनेश के चक्रवर्ती	आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि	प्रबंध संपादक
वी.एस. वेंकडेश्वरन	अपर आयुक्त, सीमा शुल्क, (मुआका), तिरुच्चिराप्पल्लि	संपादक

संपादक

एम. राजराजेश्वरी	सहायक निदेशक (रा.भा.), मु आ कार्यालय	सर्वकार्यभारी संपादक

हिन्दी

देवेन्द्र सिंह सिकरवार — वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मु आ कार्यालय

तमिल

जी वेंकटसुब्रमणियन, — अधीक्षक, सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि

अग्रेजी

एन. सत्यनारायण — अधीक्षक मु आ कार्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि

EDITORIAL BOARD

S/Shri/Smt

Dr. Uma Shanker	Chief Commissioner, Customs (Preventive)	Editor-in-Chief
D. Anil	Commissioner, Customs (Preventive),Trichy	Managing Editor
Dinesh K. Chakravarthy	Commissioner, Custom House,Tuticorin	Managing Editor
V.S. Vengadashwaran	Additional Commissioner, CC(P) Office	Editor

Editors

M. Rajarajeswari	Assistant Director (O.L) , CC Office Trichy	Editorin overall charge

Hindi

Devendra Singh Sikarwar — Senior Translation Officer,CC Office Trichy

Tamil

G. Venkatasubramanian — Superintendent, Customs Hqrs., Trichy

English

N. Sathyanarayanan — Superintendent, CC Office Trichy

The articles appearing in Tiruchy Darpan do not necessarily reflect the view of the Department. The responsibility for the opinions expressed and accuracy of the statement rests with the authors.

Front Cover Image : Thiruvanaikoil **Back Cover Image : Rockfort view**

बालेश कुमार
सदस्य एवं विशेष सचिव
BALESH KUMAR
Member & Special Secretary

सत्यमेव जयते

Azadi Ka Amrit Mahotsav

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
राजस्व विभाग
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली - 110001
Government of India
Ministry of Finance
Department of Revenue
Central Board of Indirect Taxes & Customs
North Block, New Delhi - 110001
Tel.: +91-11-23092628, Fax : +91-11-23092346
E-mail : memberinv.cbic@gov.in

संदेश

यह जानकर ख़ुशी हुई कि तिरुच्चिरापल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन, द्वारा विभागीय त्रिभाषी ई-पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण " के पांचवे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से यह सराहनीय है। यह अधिकारीयों की भाषा के प्रति जागरूकता एवं राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। "तिरुच्चि दर्पण" के पांचवें अंक के प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनायें।

(बालेश कुमार)

आजादी का अमृत महोत्सव: तिरुच्चिराप्पल्लि सीमा शुल्क में खादी प्रदर्शनी एवं बिक्री

डॉ. उमा शंकर
मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक की कलम से ....

गत वर्ष की तरह “तिरुच्चि दर्पण” का पाँचवा अंक भी ई-पत्रिका के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है, यह सचमुच प्रसन्नता का विषय है। ई पत्रिका का कम समय में ही अनेक पाठकों तक पहुँचाया जाना सुगम होता है साथ ही यह पर्यावरण संरक्षण के अनुकूल होती है। यह त्रिभाषी पत्रिका है अतः इसमें “हिंदी”, “अंग्रेजी” एवं प्रांतीय भाषा “तमिल” की रचनाओं का समावेश है। भाषा के प्रचार-प्रसार में मूल रचनाओं का सृजन महत्वपूर्ण है। निश्चित रूप से ऐसा प्रयास अधिकारियों को हिन्दी में मूल कार्य करने के लिए प्रोत्साहित एवं संवैधानिक दायित्व के प्रति जागरुक करेगा। पत्रिका में अधिकारियों के परिजनों की रचनाओं को भी स्थान दिया गया है जिससे इसे बहुआयामी एवं आकर्षक बनाया जा सके।

पत्रिका के संपादक मंडल, पत्रिका के सृजन से जुड़े सभी अधिकारी/कर्मचारी एवं उनके परिजन बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. उमा शंकर)
मुख्य आयुक्त

डी. अनिल

आयुक्त,
सीमा शुल्क (निवारक)
तिरुच्चिराप्पल्लि

प्रबंध संपादक की कलम से..........

तिरुच्चि दर्पण का पाँचवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। हमेशा की तरह पत्रिका को जोन में कार्यरत अधिकारियों की रचनाओं से सजाया गया है। ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित इस अंक में तमिल, हिन्दी एवं अंग्रेज़ी समेत तीन भाषाओं में लिखित रचनाओं को स्थान दिया गया है। आज की इस गतिशील जिन्दगी में लेखन कला को सजीव रखने के लिए इस तरह की पत्रिकाओं की अहम भूमिका है। संपादक मंडल बधाई के पात्र है।

आशा है पत्रिका पाठकों को रुचिकर लगेगी। पत्रिका के बारे में अपने विचारों को हमारे साथ साझा करने की कृपा करें।

डी. अनिल

(डी. अनिल)
आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक)
तिरुच्चिराप्पल्लि

दिनेश के चक्रवर्ती,
आयुक्त,
सीमा शुल्क गृह
तूत्तुक्कुडि

प्रबंध संपादक की कलम से..........

यह प्रसन्नता का विषय है कि तिरुच्चिराप्पल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन की विभागीय पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" का पाँचवां अंक ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है। सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि के अधिकारियों एवं उनके परिजनों द्वारा पत्रिका के लिए स्वेच्छा से रचनाएं प्रस्तुत किया जाना उनके भाषाई ज्ञान, भाषाई प्रेम एवं सृजनात्मक लेखन क्षमता को प्रदर्शित करता है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के अनुपालन में विभागीय पत्रिका का प्रकाशन विशेष महत्व रखता है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी एवं उनके परिजन बधाई के पात्र हैं। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

पत्रिका को बेहतर बनाने हेतु सुझाव आमंत्रित हैं।

(दिनेश के चक्रवर्ती)
आयुक्त,
सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि

वी.एस. वेंकटेश्वरन
अपर आयुक्त
(मु आ का)

பதிப்பாசிரியரின் பேனாவிலிருந்து......

'திருச்சி தர்பண்' ஐந்தாவது இதழை உங்கள் முன் வழங்குவதில் மகிழ்ச்சி அடைகிறேன். நமது துறை அலுவலர்கள் தங்கள் முதல் கடமையான, வரி வசூலிப்பு, செய்வதுடன், இலக்கிய படைப்புகளை வழங்குவதற்கும் நேரத்தை ஒதுக்குவதைக் கண்டு பெருமகிழ்ச்சி அடைகிறேன். இவ்விதழானது, அதிகாரிகள் மற்றும் அவரது குடும்ப உறுப்பினர்கள் தங்கள் எழுத்துத் திறனை வளர்த்துக்கொள்ளவும் கூர்மைப்படுத்தவும் பொன்னான வாய்ப்புகளை வழங்கி வருவது மேலும் மகிழ்ச்சியை கூட்டுகிறது. இந்த இதழின் வெற்றிகரமான வெளியீட்டுக்காக தங்கள் படைப்புகளை வழங்கிய எழுத்தாளர்களையும் ஆசிரியர் குழுவையும் இந்நேரத்தில் வாழ்த்தி, பாராட்டி நன்றி கூறி மகிழ்கிறேன்.

संपादक की कलम से ....

'तिरुच्चि दर्पण' का पाँचवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे आनंद का अनुभव हो रहा है। मुझे यह देखकर खुशी हो रही है कि हमारा प्रथम कर्तव्य, शुल्क संग्रहण को निभाने के साथ-साथ हमारे अधिकारियों ने समय निकालकर पत्रिका के लिए रचनाओं का योगदान दिया है। यह और भी खुशी की बात है कि यह पत्रिका अधिकारियों एवं उनके परिजनों के लिए अपनी लेखन पटुता को सान देने के लिए एक सुनहरा अवसर प्रदान करती है। मैं इस अवसर पर रचनाएँ दिए लेखकों को तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई देता हूँ और उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

From the editor's desk.....

It gives me pleasure to place before you the fifth issue of 'Tiruchy Darpan'. I am happy to see that along with performing the prime duty of tax collection, our departmental officials have taken time to contribute articles for the magazine. It is heartening that this magazine provides a golden opportunity for the officers and their family members to hone their writing skills. On this occasion, I congratulate, appreciate and thank the authors who have given articles and the editorial board for successful publication of the magazine.

वी.एस. वेंकटेश्वरन
अपर आयुक्त (मु आ का)

एम. राजराजेश्वरी

सहायक निदेशक (रा.भा)

सर्वकार्य प्रभारी संपादक की कलम से .....

तिरुच्चि दर्पण का पाँचवाँ अंक अपने साथ वर्ष 2022 के लिए ढेर सारी आशाएँ और उम्मीदें लेकर आ रहा है - बीमारियों से रहित भविष्य की आशा और मानवता के लिए एक सफल आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन की उम्मीदें।

यह पत्रिका हमारे विशाल देश के विभिन्न भागों को जोड़ने का एक साधन है। तमिलनाडु के मध्य भाग में स्थित तिरुच्चिराप्पल्लि नगर से जारी की गई पत्रिका, अपने नाम के अनुरूप यहाँ की सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक संरचना के दर्पण के रूप में कार्य करती है।

तमिल भाषा के महाकवि सुब्रमण्य भारती की अनगिनत रचनाएँ हैं। तमिल साहित्य को हिन्दी भाषियों तक ले जाने के उद्देश्य से उनमें से एक चयनित रचना, हिन्दी में अनूदित करके विशेष रूप से शामिल की जाती है। 'तमिलमरै' यानी तमिल वेद माने जानेवाले तिरुक्कुरल का एक अध्याय तमिल में उसके हिन्दी अनुवाद सहित पत्रिका के प्रत्येक अंक में प्रकाशित किया जाता है।

यह पत्रिका क्षेत्रीय भाषा तमिल, हिंदी और अंग्रेजी में अधिकारियों की अंतर्निहित साहित्यिक प्रतिभा को प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग दिया है उन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

'तिरुच्चि दर्पण' का ताज़ा अंक अब हमारी वेबसाइट पर भी उपलब्ध है और आप अपनी सुविधानुसार कभी भी इसे पढ़ सकते हैं। पत्रिका के विषय और गुणवत्ता को समृद्ध करने के लिए पाठकों के विचारों और सुझावों का स्वागत है।

शुभकामनाएँ और आभार।

एम. राजराजेश्वरी

(एम. राजराजेश्वरी)

सहायक निदेशक (रा.भा)

“उम्मीद”

कोई उम्मीद नहीं करता, क्योंकि पूरी नहीं होती,
दर्द होता है बहुत, जब मुराद पूरी नहीं होती।
यह सच है, बिना उम्मीद के जिन्दगी चलती नहीं,
मगर उम्मीद जीवन में, पूरी कभी होती नहीं ।।

क्यों कोई जिये बेवजह, मेरी उम्मीदों के लिए,
क्यों ज़हर का घूँट पिये, मेरी उम्मीदों के लिए।
सब लिए उम्मीद बैठे, आपसे अपने लिए,
मैं रखूं उम्मीद किससे, जो जिये मेरे लिए।
सब मुरादें तो किसी की भी पूरी नहीं होती,
कोई उम्मीद नहीं करता, क्योंकि पूरी नहीं होती।।

बिन्नू कुमार, अधीक्षक
केन्द्रीय आसूचना एकक

यकीन नहीं होता अब ज़िन्दगी के फलसफा पर,
उम्मीद लगाए बैठे हैं सब मेरे ऊपर।
यूं जिये जा रहा हूँ दूसरों की उम्मीदों के लिए,
यूं दिन रात एक करता, उनकी मुरादों के लिए।
अब मुझे अपने लिए ही फुरसत नहीं होती,
कोई उम्मीद नहीं करता, क्योंकि पूरी नहीं होती।।

अकसर शिकायतें रहती हैं, सबको मुझसे,
दिखता नहीं कोई ऐसा, करूं उम्मीद जिससे।
सबकी शिकायत दूर करने, दिन-रात एक किए जा रहा हूँ।
दर्द मुझे भी है बहुत पर, फिर भी मैं जिए जा रहा हूँ,
अब मुझे किसी से शिकायत नहीं होती,
कोई उम्मीद नहीं करता, क्योंकि पूरी नहीं होती।।

क्या मांगूँ मैं जगत से, जो मुझे कुछ देता ही नहीं,
उम्मीदें अभी भी बहुत हैं ,पर वजूद मेरा कुछ नहीं।
मेरी उम्मीदों की कब्र, दिन-रात जग ने खोदी है,
और कितनी उम्मीद करूं, ज़िन्दगी बहुत छोटी है,
बस कर्म में तल्लीन हो मन, उम्मीद फल की छोड़कर।
उम्मीद पूरी हो या ना हो , मन कर्म कर, निष्काम कर।।

"कुछ ऐसा कर जाऊं"

सतवीर, कर सहायक,
सीमा शुल्क गृह, तूतुक्कुडि

इस जन्म क्या हर जन्म में कुछ ऐसा कर जाऊँ
तेरे प्यार में मर-मर के, जिंदा हर बार हो जाऊँ।
सुनो जरा, अभी तो बस पढ़ना ही सीखा है,
लिखने जो लगूँ तो, क्या पता गुलजार हो जाऊँ।।

बिकने लगूँ सरेआम तो, रद्दी अखबार हो जाऊँ,
ना बिकूँ तो शायद, कीमत का हकदार हो जाऊँ।
बिन अपनाये तो, शायद मैं बेकार हो जाऊँ,
अपना बना लो, क्या पता कीमती उपहार हो जाऊँ।।

दिल, जिगर, नयन, नज़र तुम चाहो वहाँ रखलो,
दिल में रखो तो तुम्हारे दिल का दरबान हो जाऊँ।
लग जाऊँ गले, तुम्हारे गले का हार हो जाऊँ
मिल जाये संग तुम्हारा, क्या पता तुम्हारा श्रृंगार हो जाऊँ।।

तुम मिलो मुझे तो मैं भी मिलनसार हो जाऊँ,
बेअसर सी इस रूह में भी असरदार हो जाऊँ।
तेरे इनकार या इकरार से समझदार हो जाऊँ,
इस पार नहीं तो क्या पता उस पार हो जाऊँ।।

तेरे प्यार में सब खोने या पाने को तैयार हो जाऊँ,
क्या करूँ ऐसा कि इस कहानी का किरदार हो जाऊँ।
कर जतन कुछ इससे पहले कि, पागल मेरे यार हो जाऊँ।
तुम मेरी दुनिया बन जाओ, मैं तुम्हारा संसार हो जाऊँ।।

திருக்குறள் । तिरुक्कुरल

मु.गो. वेंकटकृष्णन, एम.ए. अवकाश प्राप्त हिन्दी प्राध्यापक, अलगप्पा कालेज, कारैक्कुडि ने तमिलनाडु के संत तिरुवल्लुवर विरचित तमिल भाषा के प्रसिद्ध ग्रंथ का दोहा छंद में अनुवाद किया है। तमिल मूल तथा नागरि लिपि में अनुवाद किए तिरुक्कुरल का अध्याय ५ नीचे प्रस्तुत है।

அதிகாரம் - 5 இல்வாழ்க்கை

இல்வாழ்வான் என்பான் இயல்புடைய மூவர்க்கும்
நல்லாற்றின் நின்ற துணை.

துறந்தார்க்கும் துவ்வா தவர்க்கும் இறந்தார்க்கும்
இல்வாழ்வான் என்பான் துணை.

தென்புலத்தார் தெய்வம் விருந்தொக்கல் தானென்றாங்கு
ஐம்புலத்தாறு ஓம்பல் தலை.

பழியஞ்சிப் பாத்தூண் உடைத்தாயின் வாழ்க்கை
வழியெஞ்சல் எஞ்ஞான்றும் இல்.

அன்பும் அறனும் உடைத்தாயின் இல்வாழ்க்கை
பண்பும் பயனும் அது.

அறத்தாற்றின் இல்வாழ்க்கை யாற்றின் புறத்தாற்றிற்
போஒய்ப் பெறுவது எவன்.

இயல்பினான் இல்வாழ்க்கை வாழ்பவன் என்பான்
முயல்வாருள் எல்லாம் தலை.

ஆற்றின் ஒழுக்கி அறனிழுக்கா இல்வாழ்க்கை
நோற்பாரின் நோன்மை உடைத்து.

அறனெனப் பட்டதே இல்வாழ்க்கை அஃதும்
பிறன்பழிப்பது இல்லாயின் நன்று.

வையத்துள் வாழ்வாங்கு வாழ்பவன் வானுறையும் .
தெய்வத்துள் வைக்கப் படும்.

अध्याय - 5 गार्हस्थ्य

धर्मशील जो आश्रमी, गृही छोड़ कर तीन।
स्थिर आश्रयदाता रहा, उनको गृही अदीन।।

उनका रक्षक है गृही, जो होते हैं दीन ।
जो अनाथ हैं, और जो, मृतजन आश्रयहीन ।।

पितर देव फिर अतिथि जन, बन्धु स्वयं मिल पाँच ।
इनके प्रति कर्तव्य का, भरण धर्म है साँच।।

पापभीरु हो धन कमा, बाँट यथोचित अंश।
जो भोगे उस पुरुष का, नष्ट न होगा वंश।।

प्रेम-युक्त गार्हस्थ्य हो, तथा धर्म से पूर्ण।
तो समझो वह धन्य है, तथा सुफल से पूर्ण।।

धर्म मार्ग पर यदि गृही, चलायेगा निज धर्म।
ग्रहण करे वह किसलिए, फिर अपराश्रम धर्म।।

भरण गृहस्थी धर्म का, जो भी करे गृहस्थ।
साधकगण के मध्य वह, होता है अग्रस्थ।।

अच्युत रह निज धर्म पर, सबको चला सुराह ।।
क्षमाशील गार्हस्थ्य है, तापस्य से अचाह ।।

जीवन ही गार्हस्थ्य का, कहलाता है धर्म।
अच्छा हो यदि वह बना, जन-निन्दा बिन धर्म ।।

इस जग में है जो गृही, धर्मनिष्ठ मतिमान।
देवगणों में स्वर्ग के, पावेगा सम्मान।।

अंहकार और बलिदान

सतीश कुमार पाण्डेय
भाई श्री आनंद कुमार पाण्डेय,
कर सहायक

तुम्हें अपनी कामयाबी पर हुआ अभिमान है।
पीछे मुड़कर देखो जरा, कितनों का भेंट चढ़ा अरमान है।
तेरी बुलंदियों की नींव में, आज भी दीनता के पाँव तले सिसकता कोई इंसान है।
अपने जीवन का हर क्षण वार दिया तुझे, तभी तेरे हिस्से हौसलों की उड़ान है।
लहूलुहान हुए होंगे पाँव किसी के, किसी के लहू के आखिरी कतरे तक बहे होंगे।
दिए होंगे स्वयं के निवाले तुम्हें, खुद कई दिनों खाली पेट रहे होंगे ।
वेदना, व्यथा का सागर अपने सीने में दफन किये होंगे ।
त्रिपुरारी ने पिया विष एक बार, उन्होंने हर कदम पर विष के प्याले पिये होंगे।
स्वयं का सर्वस्व न्योछावर कर, तुम्हें सफलता के आधार दिए होंगे।
धन के मद में चूर कुछ मगरूर कहते हैं - मेरे जीवन में उनका स्थान क्या है?
मैंने पाया सबकुछ अपनी बदौलत, उनका योगदान क्या है?
उन्होंने तो अपना फर्ज निभाया, इसमें बलिदान क्या है?
मैं भी किया वही, जो जहाँ कर रहा है तो मेरा अभिमान क्या है?
मेरा भी प्रश्न एक?, उनके वजूद के बगैर तुम्हारी पहचान क्या है?
पुरखों के अद्वितीय त्याग से पोषित इस धरा पर तुम्हारा काम क्या है?

हिंदी हमारी मातृभाषा

हमारी अखंडता एकता सभ्यता संस्कृति के महिमा ज्ञान की भाषा
भारत वसुंधरा के आत्मसम्मान की भाषा
मनु-पुत्रों के गौरव व्याख्यान की भाषा
दुनिया में फतह करने वाले वीरों के सम्मान की भाषा
राम, कृष्ण, बुद्ध आदि के गुण गान की भाषा
विवेकानंद के स्वाभिमान की भाषा
हर वक्त मन में जगाए अभिलाषा
जब-जब हमें घेरे हताशा दिलाती यह हमें दिलासा
अंतर्मन में क्षण-क्षण करे प्रज्वलित नई उम्मीद नई आशा
यह भाषा यथार्थवादी इसने व्योम मंडल में अपनी आभा फैला दी
यह रामचंद्र के गुणगान की भाषा तुलसी के मधुर गान की भाषा
कृष्ण के महिमा बखान की भाषा
सूरदास के कल्याण की भाषा
प्रसाद, पंत, निराला, बोध,दिनकर के राष्ट्रीय गौरव गान की भाषा
रहीम, कबीर के ऐलान की भाषा
नागार्जुन के ग्रामीण गांव की भाषा
गरीबों की पहचान की भाषा
महादेवी और सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा
भारतेंदु के उल्लास की भाषा
शुक्ल के इतिहास की भाषा
हम सबके विश्वास के और संत प्रकाश की भाषा
बिस्मिल्लाह खान की शहनाई की पहचान की भाषा
हजारों कवियों के बलिदान, अनुसंधान की भाषा
इमरत, पुनर्नवा, झूठ-सच और गोदान की भाषा
बिहारी के नीति गान की भाषा
मैथिल कोकिल के गंगा स्तुति की तान की भाषा
पंचतंत्र, माँ, ढहते विश्वास के सामाजिक पहचान की भाषा
राधाकृष्णन के व्याख्यान की भाषा
अटल जैसे समर्थवान की भाषा
सुषमा स्वराज की पहचान की भाषा
यह प्यार, सत्कार, संस्कार सदव्यवहार, प्रतिकार और हुंकार की भाषा
हिंदी है हर सरकार की भाषा
विश्व में अब, बन रही यह नई उड़ान की भाषा
आओ बनाएं मिलकर इसे वसुंधरा के प्रथम स्थान की भाषा।

“ऐ जिंदगी”

राजेश कुमार,
अधीक्षक

मुझे याद है अंधेरी गलियाँ,
जहाँ मैं तेरी राह देखता था ऐ जिंदगी ।
हर सुबह जब तू मुझसे मिलती थी, 'अपने सफर का आगाज करता था ऐ जिंदगी।
मैं था तन्हाई थी और थे मेरे सपने,
शुक्रगुजार हूँ तेरा जो तूने सच कर दिखाया ऐ जिंदगी ।
मैंने तेरी पलकों की छाँव में लिया है आसरा,
हर दर्द से रू-बरू तूने कराया है जिंदगी |
मैं कमजोर था, टूटा था, हालातों से लड़कर ,
तूने मुझे गिरकर उठना सिखाया है जिंदगी ।
सरपरस्त था मैं अपने अनगिनत अरमानों का,
आजादी का एहसास तूने दिलाया ऐ जिंदगी ।
नहीं डरता अब मैं इन काले घने अंधेरों से,
चिरागों को चिरागों से जलाना तूने ही तो दिखाया ऐ जिंदगी।
इल्तिजा है मेरी इन बादलों से बरस जाएँ इस सूखी जमीं पर,
एक गुलशन तूने भी तो लगाया है ऐ जिंदगी ।
मैं बयाँ नहीं कर सकता तेरी चाहत को शब्दों में,
सर्दी की रात में दहकती हुई एक आग है ऐ जिंदगी।
एक महक है. इस फ़िज़ा में जो मदहोश करती है मुझे,
जी करता है तुझे गले लगा लूँ ऐ जिंदगी।

श्रीमती मीनाक्षी कुमारी
w/o श्री केशव देव, निरीक्षक

कोरोना

कोरोना है सबसे बड़ी बीमारी,
इससे है पूरी दुनिया हारी।।

समस्या है कैसी नई पधारी,
गुलामी कर रही इसकी दुनिया सारी।।

लोग बंद हैं घरों में यहाँ,
जाने है इसका अंत कहाँ।

मनुष्य जीवन हो जाएगा खराब,
अगर कोरोना का नहीं किया गया इलाज।।

क्यों न इसका अब अंत करें हम,
कोरोना का टीका लगवाएं हम।

क्यों इससे अब हम सब डरें।
तो आओ मिलकर एक प्रण करें।

एक नई दुनिया बसाएंगे,
प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएंगे।

सबका टीकाकरण कराकर,
कोरोना को जड़ से मिटाएंगे।।

"तो समझ लेना"

जिंदगी के किसी दौर में,
जब तुम खुद को अकेले पाओ,
तो खुद को चाँद समझ लेना,
जो अकेले ही स्याह रातों को
उजियारी करता है
जब मंजिल दूर लगे,
और पद पर भी ठोकर लगे,
तो खुद को दीवार पर चढ़ती
नन्ही चींटी समझ लेना,
जो सौ बार फिसलती है पर
हिम्मत नहीं खोती है।
जब राहों में कांटे ही कांटे हों,
और मुश्किलों के पत्थर राह रोके हों,
तो खुद को वह शिल्पकार समझ लेना
जो पत्थर को तराश कर ईश्वर बना दे ---
जब हो रहा हो मन हताश,
और विश्वास में न रहे कोई आस
तो खुद को बच्चा समझ लेना
और हर-मन को सच्चा समझ लेना ॥

महेश कुमार मीणा,
अधीक्षक

चाह

हे भगवान! तू भले ही उदार दिलवाला है,
सबका हितैषी है, किंतु बड़ा औढर-दानी है।
किसीको बाकी कुछ दिया या नहीं दिया,
लेकिन यह एक तो अवश्य दिया-

भूखों मरनेवालों को भोजन की चाह,
भोजन मिल जाए तो प्यार की चाह,
प्यार मिलने पर परिवार की चाह,
परिवार के लिए मकान व गाडी की चाह।।

जग में हो रहे सारे अन्याय का,
मानव की चाह, बेशक मूल है इसका।
न माँ-बाप, न भाई-बहन की चिंता कभी,
होती इस चाह रूपी मायाजाल में फँसते ही।।

चाह बिना जिन्दगी नीरस है,
असीम चाह, असीम अमृत समान विष है।
चाह ऐसी दो कि जिसकी सीमा भी हो,
जिससे मन में, विश्व में शांति की कमी न हो ।।

एम. राजराजेश्वरी,
सहायक निदेशक (रा.भा)

GOLDEN KEY

The unkind word spoken by a friend
The one unspoken by one loved
The letter, which hurt, when received
The one yearned for, not received.

A word uttered, may a dispute create
One unuttered, a friend may it alienate
Too much eloquence is chatter
What is spoken does always matter.

When the mind is restless
And is trapped in thoughts endless
There is one that gives us peace
And thus makes us feel at ease.

The golden key to a peaceful mind
One can in market not find
It is that which bestows resilience
And can it be anything else but SILENCE?

छठ महापर्व

नीरज कुमार
अधीक्षक

यूँ तो उदीयमान सूर्य की पूजा हर कोई करता है: परंतु भारतवर्ष में स्थित बिहार राज्य में मुख्य रूप से आयोजित त्योहारों में से एक, छठ महापर्व ऐसा त्योहार है जो कि अस्ताचलगामी सूर्य की भी आराधना उसी समभाव से करता है जिस भाव से उगते सूर्य की। यह इस बात का द्योतक है कि जिसने अपने प्रकाश से विश्व को आलोकित किया, हम उसके अवसान के समय भी उसकी पूजा करते हैं व उसका सम्मान करते हैं। साथ ही इस बात का भी परिचायक है कि हर अंधकार के बाद एक नया सवेरा, एक नई उर्जा, एक नई आशा की किरण अवश्य आएगी|

छठ पर्व मुख्यतः वर्ष में दो बार मनाया जाता है। एक चैती छठ जो कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के षष्ठी के दिन मनायी जाती है तथा दूसरी जो कि सर्वाधिक लोकप्रिय है वह है कार्तिक छठ, जो कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के छठे दिन के आधार पर मनायी जाती है। इस संदर्भ में अनेक पौराणिक कथाएँ मौजूद हैं। छठ पर्व में सूर्योपासना के साथ-साथ छठी मईया की भी पूजा की जाती है। पुराणों में नव दुर्गा की षष्ठी रूप माँ कात्यायनी को ही षष्ठी देवी कहा गया है। सनातन धर्म के अनुसार षष्ठी देवी को ब्रह्मा की मानस पुत्री कहा गया है तथा षष्ठी देवी को सूर्यदेव की मानस बहन भी कहा गया है। (मानस पुत्री का अर्थ है जिसका जन्म केवल मन के तरंगों के मिलन से हुआ है।) यह हमारे वेद-पुराण की खासियत है कि इसमें अत्याधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों के भी साक्ष्य मौजूद हैं। बिहार राज्य का एक जिला है 'भागलपुर' जो कि महाभारत काल में अंग प्रदेश के नाम से जाना जाता था। जिसके राजा स्वयं सूर्यपुत्र कर्ण थे। उनके द्वारा भी सूर्योपासना व छठ पूजा करने का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है द्रोपदी व पाण्डवों ने भी खोया राज-पाट पाने के लिए छठ-पूजा की थी। | साथ ही रामायण में भी उल्लेख है कि वनवास से लौटने के पश्चात् राम-सीता ने रामराज्य की स्थापना हेतु इस पूजा विधि को आयोजित किया था।

छठ- पूजा वस्तुत: 4 दिनों तक की जाती है। जो व्रत रखते हैं उनके लिए यह एक तपस्या के समान है। कार्तिक मास / चैत्र मास की चतुर्थी से प्रारंभ होकर यह सप्तमी को समाप्त होती है।

नहाय-खाय :
कार्तिक चतुर्थी के दिन व्रती व अन्य भक्त सभी घर-आँगन की सफाई करके गोबर से लीपने के पश्चात भोजन बनाते हैं। खासकर इस दिन लौकी - चना दाल की सब्जी बनाने का रिवाज है। छठ पूजा में शुद्धता का खास ध्यान रखा जाता है।

खरना-
इस दिन व्रती पूरे दिन निर्जला व्रत रखते हैं। शाम को दूध, चावल व गुड़ से बनी खीर / रसिया का भोग के पश्चात सेवन किया जाता है। व्रती पूरे दिन भूखे-प्यासे रहकर सेवा-भाव से शाम में यह प्रसाद ग्रहण करते हैं उसके बाद 36 घंटे का निर्जला व्रत होता है जो सप्तमी को समाप्त होता है।

संध्या-अर्घ्य :
इस दिन सभी अपने घरों में सुविधानुसार कच्चे बाँस की बहंगी /टोकरी बनाते हैं साथ ही शुद्ध आटे व गुड़ मात्र से भोग लगाने हेतु पकवान बनाते हैं। यह ठेकुआ कहलाता है। सिर्फ 2-3 व्यंजनों से निर्मित यह पकवान स्वाद में अलौकिक होता है। संध्या समय सभी भक्त व व्रती नदी-तालाब के घाट पर एकत्रित होते हैं। घाट को केले के पत्ते व गन्ने वगैरह से सुसज्जित किया जाता है। व्रती महिलाएं व पुरुष कमर तक पानी में समाधि लेकर सूर्य देव व छठी माता की आराधना करते है तथा भक्त लोग सूर्य को अर्घ्य देते हैं। इस समय के लोगगीत जो महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं, अद्भुत कर्णप्रिय होते हैं। संध्या अर्घ्य के पश्चात् सभी लोग वापस सूप व पूजा सामग्री को व्यवस्थित कर वापस लौट जाते है ।

प्रातः अर्घ्य :
सप्तमी के दिन उषाकाल से पहले ही सभी भक्त घाट पर इसी प्रकार एकत्रित होते हैं जैसे पूर्व संध्या समय हुए थे। उस प्रातः वेला की ठिठुरती ठंड में भी व्रती जल में खड़े होकर सूर्यदेव व छठ माता के लिए गीत गाते हैं। सूर्योदय के पश्चात् उनको सूप में भोग चढ़ाया जाता है तथा सभी भक्त-गण कच्चे दूध व जल से उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं। इस दिन पूरे घाट पर समरसता का भाव होता है। सभी लोग ऊँच-नीच, जात-पाँत आदि से ऊपर उठकर सभी व्रती का आशीर्वाद लेते हैं उनके आगे नतमस्तक होते हैं। इस प्रकार अंतिम दिन घाट से लौटने के पश्चात व्रती दूध व जल पीकर अपना व्रत समाप्त करते हैं। इसे पारण कहते हैं।

छठ पर्व कई मायनों में अद्भुत अलौकिक अद्वितीय व अनूठा त्योहार है। इसमें किसी पंडित-पुरोहित, मंदिर-मूरत या अन्य किसी विशेष क्रियाविधि की आवश्यकता नहीं होती है। यह संपूर्ण रूप से प्रकृति को समर्पित है। संपूर्ण जगत को अपने प्रकाश से रोशन करने वाले आदिदेव सूर्य की पूजा, सबको जीवन देने वाले जल में डूबकर की जाती है। भोग की वस्तुएँ भी बिल्कुल ग्रामीण संस्कृति व मिट्टी से जुड़ी हुई हैं। कच्ची हल्दी, गन्ना सूथनी, सिंघाड़े आदि अन्य कई फल हैं जो हमारे देश /गाँव की मूल संस्कृति को दर्शाते हैं। लोगों का आपस में सेवा भाव भी अविस्मरणीय होता है। घाटों को सजाना, कच्चे बांस की बहंगी/टोकरी बनाना, उसे घाट तक पहुंचाना ठेकुआ बनाना, हर कार्य सभी मिल-जुल कर करते हैं। छठ पर्व का गीत संगीत भी पूर्णरूप से मनोहारी है, सीधे दिलों में घर करता है। वह चाहे भोजपुरी, मैथिली, मगही, वज्जिका या अंगिका कोई सी भी भाषा हो सभी भाषा में लिखे गए गीत बिल्कुल माटी से जुड़े होते हैं। शारदा सिन्हा के बोल दिल को छूते हैं उनमें माटी की सुगंध होती है। इनके गीत के बोल व सुमधुर संगीत बड़े ही भावुक व हृदयस्पर्शी होते हैं।

आज की युवा-पीढ़ी जो रोजी-रोटी के लिए अपने गाँव से दूर शहरों में बसी हुई है, मेरी उनसे गुजारिश रहेगी कि छठ त्योहार जैसे मौकों पर अपने पूर्वजों की भूमि पर जरूर जायें तथा इस पारंपरिक सांस्कृतिक सौहार्द्र को और अधिक समृद्ध बनायें | यह लोक-आस्था व परंपरा का पर्व है। आज इसकी ख्याति देश-विदेश में फैल रही है इसकी वजह इसका प्रकृति व जड़ से जुड़ाव ही है। छठ-माता आपकी व सबकी मनोकामना पूर्ण करें ।

ज़िन्दगी इसी का नाम है यारो

कहने को तो है, बहुत कुछ मेरे मन में,
शुरु कहाँ से करूँ, रहा इस असमंजस में।
ज़िन्दगी हो चली है नीरस-सी इस कशमकश में,
क्यों रखूँ किसी से आस कोई अपने जीवन में।।

समय परीक्षा ले रहा है पल-पल,
भटक रहा हूँ ख़ुशी की आस में दर-दर।
घाव गहरे हो चले हैं अब मेरे मन में,
आस खुशी की कैसे देखूँ अब जीवन में।।

नमक लेके घूमते हैं लोग कर में,
मौका मिले तो छिड़क देते, घाव पर एक पल में।
क्यों भर गया ज़हर इतना ज़िन्दगी में,
क्यों नहीं कोई जिए कुछ पल ख़ुशी के जिंदगी में।

आता है मौका एक, गर ख़ुशी का,
तो तैयार बैठे ग़म अनगिनत, मैं , करूँ क्या।
इस छोटी सी ज़िन्दगी में क्या रखूँ क्या न रखूँ मैं,
सुख-दुख दोनों हमसफर हैं जीवन के अविराम सफर में।।

बहुत मुश्किल से मिलता है, कोई सँभालनेवाला,
बुरे वक़्त में कोई सहारा देनेवाला।
मिले दोस्त कोई ऐसा, तो बस अपना लेना।
जीवन उसका भी खुशियों से तुम भर देना।।

एकपल का भी नहीं भरोसा, काल दगा कब दे जाए,
श्वासों का नहीं कोई भरोसा, कब चलते-चलते रुक जाए।
हँसना मुस्कुराना फितरत है मेरी,
हर हाल में खुश रहना आदत है मेरी।।

कोई नहीं बचा अछूता, सुख-दुख से दोस्तो,
ज़िन्दगी इसी का नाम है दोस्तों ?
जीवन के दिन चार, खुल के जियो यारो,
ज़िंदा दिली ही ज़िन्दगी का नाम है यारो।।

बिन्नू कुमार, अधीक्षक
केन्द्रीय आसूचना एकक

धीरज कुमार वर्मा,
कर सहायक,

मैं पथरीला पथ हूँ जीवन का,
तुम कोमल कंचन काया हो।
मैं घनघोर अंधेरा हूँ जीवन का,
तुम अद्भुत जलती ज्वाला हो।

मैं प्रेम से हरपल दूर रहने वाला,
तुम चाहत की मधुशाला हो।
मैं छल के बल पर जीने वाला,
तुम निश्छल प्रेम का साया हो।

हृदय वेदना
लक्ष्य विहीन पक्षी मैं, प्रेमी नीले आसमान का
भ्रमवश कैद होकर पिंजड़े में भूला अपनी आजादी।
असीम प्रेम था मुझ उड़ते पक्षी का नील गगन से,
पर अतीत हुआ अब सुखमय मेरा जीवन।
पिंजड़े की कैद में अब किसको हृदय वेदना समझाता,
बना शिकार बहेलिया की कुटिल नजरों का।
खो दी मैंने प्राण-प्रिय अपनी आजादी,
जाने क्यूँ, नियति ने भाग्य में मेरे लिख दी बरबादी।।

निष्प्रयोजन कर्म

“कमर्णो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कमर्णो गतिः॥17॥

देवेन्द्र सिंह सिकरवार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
मु.आ.का. सीमा शुल्क, तिरुच्चिराप्पल्लि

कर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए और अकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए तथा विकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए, क्योंकि कर्म की गति गहन है।(अध्याय ४)”

कर्म का पहला सिद्धांत है कि कोई भी प्राणी बिना कर्म किए, एक क्षण भी नहीं रह सकता। अब यह कर्ता के विवेक पर निर्भर है कि वह कर्म, अकर्म, विकर्म, निष्काम कर्म या निष्प्रयोजन कर्म में से किसको अधिक महत्व देता है। कर्म से तात्पर्य है – सामान्य कर्म जो किसी न किसी इच्छा के अधीन हो कर किए जाते है। विकर्म का अर्थ है पाप कर्म, अनुचित या निषिद्ध कर्म। कर्ता जब निष्काम भाव से अर्थात् बिना फल की इच्छा से करने योग्य कर्म करता है, ऐसा कर्म निष्काम कर्म कहलाता है। निष्काम कर्म बंधनकारी नहीं होता कर्ता उसके पाप-पुण्य का भागी नहीं होता। कर्म बंधन से मुक्त होने के कारण यह कर्म अकर्म में परिणत हो जाता है।

कर्म का दूसरा सिद्धांत है कि उसका समुचित फल अवश्य मिलता है। फल की इच्छा रखने या न रखने से यह सिद्धांत बदलता नहीं है। इस को इस उदाहरण से समझ सकते हैं कि दुनिया में कोई भी व्यक्ति दुख, कष्ट और गरीबी पाने की इच्छा से कर्म नहीं करता फिर भी दुख, कष्ट और गरीबी दुनिया में मौजूद हैं। अर्थात् कर्म-फल मन चाही इच्छानुसार नहीं बल्कि औचित्य के अनुसार प्राप्त होता है। भले-बुरे कर्म का फल देर-सवेर मिलता ही है। विडंबना यह है कि फिर भी हम निष्काम कर्म नहीं कर पाते, परिणामस्वरूप कर्म बंधन में बंध जाते हैं।
सभी स्वार्थ रहित कर्म निष्काम कर्म नहीं होते। कर्ता के राग रहित होने के लिए स्वार्थरहित और सप्रयोजन एवं सार्थक कर्म निष्काम कर्म कहलाते हैं। बिना प्रयोजन के स्वार्थ रहित कर्म भी निष्प्रयोजन कर्म बन जाते हैं। निष्प्रयोजन कर्म समाज में अभाव, विषाद, पतन एवं पराधीनता पैदा करते हैं। निष्प्रयोजन कर्मों को हम मुख्य रूप से शारीरिक, वाचिक एवं मानसिक निष्प्रयोजन कर्म में बांट सकते हैं।

शारीरिक निष्प्रयोजन कर्म – बिना किसी प्रयोजन के शरीर से किए गए कर्म जैसे बैठे-बैठे तिनका तोड़ना, पैर हिलाते रहना, समय बिताने के लिए ताश खेलना आदि। कुछ लोग इसके इतने आदी हो जाते हैं कि उनकी कर्मनिष्ठा देखते ही बनती है। कुछ लोग ट्रेन में भारी भीड़ के बीच भी ताश खेलने के लिए जगह बना लेते हैं। कुछ लोग ताश खेलने की जगह पर समय से पहले आकर अपनी जगह सुनिश्चित कर लेते हैं और खेल पूरा होने तक लघुशंका के लिए भी अपना आसन इस भय से नहीं छोड़ते कि तुरंत कोई दूसरा उस पर आसीन हो जाएगा। उनको समय की बरबादी के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं लगता। आज बच्चे भी इससे अछूते नहीं रह गए हैं। वीडियो गेम एवं मोबाइल ने रही-सही कसर पूरी कर दी है।

वाचिक निष्प्रयोजन कर्म – व्यर्थ की बकवास करना, गपशप करना, अपनी शेखी बघारना, अकारण दूसरों की निंदा करना आदि कर्म, वाचिक निष्प्रयोजन कर्म की श्रेणी में आते हैं। इसमें परनिंदा सबसे घोर कर्म है (पर निंदा सम अघ न गरीसा)। निंदारस में लोगों को इतना आनंद आता है कि जैसे लोभी को धन, भोगी को भोग और कामी को रूप-लावण्य मिल गया हो। अहंकारी भी अपना अहंकार छोड़कर निंदक की हाँ में हाँ मिलाने लगता है, मौनी भी अपनी मुंडी हिलाकर मूक सहमति दे देता है। इसमें लोगों का कितना समय एवं सामर्थ्य व्यर्थ होता है, आकलन नहीं किया जा सकता है।

मानसिक निष्प्रयोजन कर्म – किसी भी कर्म की उत्पत्ति पहले मन में विचार के रूप में होती है। विचार का निश्चय बुद्धि द्वारा किया जाता है तत्पश्चात् वही विचार कर्म में परिणत हो जाता है। इसलिए मानसिक कर्म शारीरक कर्म से अधिक महत्व रखते हैं। फालतू चिंतन, भूतकाल का चिंतन, भविष्य की अनावश्यक चिंता, अपने निर्धारित कर्म छोड़ कर अन्य विषयों का चिंतन आदि मानसिक निष्प्रयोजन कर्म की श्रेणी में आते हैं। बुद्धू हलवाई रबड़ी बना रहा था। मानसिक चिंता उसके चेहरे पर स्पष्ट झलक रही थी। किसी ग्राहक ने उसकी चिंता का कारण पूछ ही लिया। बुद्धू हलवाई बोला अरे भैया सुना है एक दिन सूरज भी ठंडा हो जाएगा, जब आग ही नहीं बचेगी तो रबड़ी कैसे बनेगी? बस यही चिंता मुझे खाए जा रही है। ऐसा चिंतन जो सार्थक कर्म में परिणत नहीं हो सके, मानसिक निष्प्रयोजन कर्म में ही गिना जाएगा।

सारांश में हम कह सकते है कि हमें निष्काम कर्म तो करने चाहिए किंतु वे भी निष्प्रयोजन नहीं होने चाहिए।

सोशल मीडिया समाज के लिए हितकर या अहितकर

(हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध)

अविनाश मिश्र, अधीक्षक
सीसीओ तिरुच्चि

"कनेक्टिविटी (परस्पर जुड़ाव) एक मानव अधिकार है। "- मार्क जुकरबर्ग "
सोशल मीडिया ने हमारे संवाद को लोकतांत्रिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। -
"माननीय प्रधान मंत्री - नरेन्द्र मोदी"

परिचय :

सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपने विचारों को एक दूसरे के साथ साझा कर एक नई बौद्धिक दुनिया का निर्माण कर रहे हैं। वाक एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र का एक अहम हिस्सा है। इस अधिकार के प्रयोग के लिए सोशल मीडिया ने जो अवसर नागरिकों को दिए हैं, एक दशक पूर्व उनकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। दरअसल, इस मंच के जरिये समाज में बदलाव की बयार लाई जा सकती है।

कुछ लोगों का मानना है कि यदि आप डिजिटल प्रणाली अपनाने में सक्षम नहीं हैं तो आपका कोई अस्तित्व नहीं है यही कारण है। कि आज के आधुनिक युग को डिजिटल युग के नाम से भी जाना जाता है।

सोशल मीडिया से तात्पर्य :- वे प्रौद्योगिकियाँ जो " सामाजिक संजाल स्थल " (सोशल नेटवर्किंग साइट्स) का प्रयोग करके सूचनाओं, चित्रों और विचारों को अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ साझा करने की अनुमति प्रदान करती हैं उन्हें हम सोशल मीडिया कहते हैं, उदाहरण- फेसबुक, ट्विटर, यू –ट्यूब, गूगल आदि। यह आज के समाज का एक अभिन्न अंग है जिसके माध्यम से हम कहीं भी, कभी भी किसी भी प्रकार की जानकारी अविलम्ब प्राप्त कर सकते हैं। अपनी सेवाओं के अनुसार सोशल मीडिया के लिए संचार प्रौद्योगिकी उपलब्ध है। उदाहरणार्थ.

सहयोगी परियोजना	-	उदाहरण के लिए, विकिपीडिया
ब्लॉग और माइक्रोब्लॉग	-	उदाहरण के लिए, ट्विटर
सोशल खबर नेटवर्किंग साइट्स	-	उदाहरण के लिए, डिग लेकररनेट
सामग्री समुदाय	-	उदाहरण के लिए, यूट्यूब और डेली मोशन
सामाजिक नेटवर्किंग साइट	-	उदाहरण के लिए फेसबुक
आभासी खेल दुनिया	-	उदाहरण के लिए, वर्ल्ड ऑफ वारक्राफ्ट
आभासी सामाजिक दुनिया	-	उदाहरण के लिए, सेकंड लाइफ

सोशल मीडिया का मानव जीवन पर लाभकारी / हितकारी प्रभाव :

जब हम सोशल मीडिया के लाभों की बात करते हैं तो हमें यह लगता है कि शायद ही मानव जीवन का कोई पहलू इससे अछूता रहा है जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं: -

रोजगार का सृजन :- सोशल मीडिया रोजगार प्रदान करने का एक साधन बन चुका है। इससे लोग स्वरोजगार करके धन अर्जित कर सकते हैं। इससे जुड़े कुछ कैरियर हैं- सोशल मीडिया मार्केटिंग एक्सपर्ट, कंटेंट राइटर, ब्लॉगर, यू-ट्यूबर सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर

शिक्षा के क्षेत्र में :- सोशल मीडिया का प्रयोग करके कोई भी व्यक्ति अनेकों विषयों के बारे मे आसानी से घर बैठे ज्ञान प्राप्त कर सकता है। दुनिया के एक देश मे बैठा व्यक्ति दूसरे किसी भी देश के जानकार व्यक्ति से सम्पर्क कर उससे ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

व्यापार के क्षेत्र में :- सोशल मीडिया से जुड़े मोबाइल एप और कम्प्यूटर साफ्टवेयर की सहायता से लोग अपने व्यापार को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा पा रहे हैं। इसके द्वारा प्रोडक्ट्स की मार्केटिंग व सेल दोनो ही बहुत सरलतापूर्वक व कम खर्च में की जा सकती है।

राजनीति के क्षेत्र में:- नागरिक पत्रिकारिता , लोकतंत्र का पाँचवां स्तंभ सोशल मीडिया है । इसके द्वारा राजनीतिक अभियान, विज्ञापन योजना व चुनाव जीतने में लोगों को काफी मदद मिलती है।

सामाजिक मुद्दे व सोशल मीडियाव्यापक सोच/संपर्क कमजोर वर्ग तक पहुँच शिक्षा स्वास्थ्य की पहुँच	अर्थ व्यवस्था और सोशल मीडियाप्रत्येक संगठन – सोशल मीडिया विभाग ई-कामर्स स्टार्ट अप डिजिटल मार्केटिंग	नैतिक और सोशल मीडियाअनु. 19 यूएनओ - मानवाधिकार

सोशल मीडिया का मानव जीवन पर दुष्प्रभाव :- कुछ दिन पूर्व, संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अफ्रीकी अमेरिकी युवक की मृत्यु के बाद बड़े पैमाने पर हिंसक विरोध प्रदर्शन का दौर प्रारम्भ हो गया। यह हिंसक विरोध प्रदर्शन स्वतः परंतु सोशल मीडिया द्वारा विनियोजित था। दरअसल इस मंच के जरिये समाज में बदलाव की बयार लाई जा सकती है लेकिन चिंता का विषय है कि मौजूदा वक्त में सोशल मीडिया सामाजिक समरसता को बिगाड़ने का काम कर रही है।

इसके कुछ दुष्प्रभाव इस प्रकार हैं :-

सोशल मीडिया की लत, फीयर ऑफ मिसिंग आउट, अन्य व्यक्तियों से तुलना, आत्महत्या की लाइव स्ट्रीमिंग, आँखों से जुड़ी समस्या, व्यायाम की कमी, ध्यान भटकना, आंतरिक सुरक्षा के समक्ष चुनौतियाँ भ्रामक खबरे सार्वजनिक जीवन का वस्तुकरण, साइबर अपराध आदि ।

निष्कर्ष :-

संक्षेप में कहें तो सोशल मीडिया एक दोधारी तलवार की तरह है। अंततः यह उसके उपयोगकर्ता को समझाना होगा कि दैनिक जीवन, व्यायाम एवं सोशल मीडिया के मध्य संतुलन कैसे स्थापित करता है। सरकार को सख्त साइबर सुरक्षा कानून व साइबर नीतियों का निर्माण करना चाहिए जिससे सोशल मीडिया को और अधिक सुरक्षित बनाया जा सके। बच्चों को प्रारम्भ से ही सोशल मीडिया की समस्याओं से अवगत कराना चाहिए ।

विक्टर हयूगों का कथन , "पृथ्वी पर कोई शक्ति किसी विचार को रोक नहीं सकती जिसका समय आ गया हो। वर्तमान में वह शक्ति सोशल मीडिया है"

बेटियाँ

प्रियंका यादव
W/o हज़ारी लाल अधीक्षक

नौ महीने जिसको गर्भ में रखा उसका बाहर आने का इंतजार था,
जब बाहर आया तो, उसको देखने का इंतजार था,
जब पहली बार देखा उस मासूम चेहरे को तो देखती ही रह गई,
शायद उस नन्ही परी के घर आने की खुशी का इज़हार था।

सबके चेहरे लटके हुए थे, सब मुझे ढांढस बंधा रहे थे,
माना मुझ पर कौन सी मुसीबत आन पड़ी है,
क्या मेरे घर में आज दूसरी भी बेटी आ गई है।
जब पति को बताया तो बहुत खुश हुये थे,
क्योंकि फिर एक बार वो पापा बने थे,
समाज की बातें सुनकर थोड़ा वो भी घबराये थे,
जब बेटी को देखा तो बहुत मुस्कुराये थे।

मेरे साथ हमेशा खड़े रहे,
बेटियों को उँगली पकड़कर चलना सिखाये थे।
क्योंकि आज वो समाज की घिनौनी सोच से ऊपर उठ चुके थे,
आज हमारे घर में हमेशा खुशियाँ गूंजती रहती हैं।
क्योंकि आज हमारे घर में दो खूबसूरत-सी परियाँ रहती हैं।
पर आज भी समाज के कुछ नक्कारों को समझने की जरूरत है :-

जिस गर्भ से तूने जन्म लिया।
जिसके सहारे इस संसार का दीदार किया।
जिस जिस्म से तूने प्यार किया,
जिसके संग सातों जन्म साथ निभाने का वचन लिया,
वो भी तो एक नारी है, फिर बेटी ही क्यों भारी है ?
फिर बेटी ही क्यों भारी है।

मध्यम वर्गीय कैसे जीता है....

प्रशांत कुमार मीणा
अधीक्षक कस्टम हाउस, तूतीकोरिन

वो थोड़े में ही बहुत जी लेता है, भीतर ही भीतर अपने आँसू पी लेता है.
मध्यम वर्गीय अपनी खुशियां सी लेता है।

खत्म टूथपेस्ट पर बेलन फेर लेता है, बचे साबुन के टुकड़े को नए से जोड़ लेता है,
अंतिम सांस लेते सिलेंडर को टेढ़ा कर लेता है, वो थोड़े में ही बहुत जी लेता है..

बड़े भाई-बहन के कपड़े छोटा पहन लेता है, वो पुराने पाजामे के थैले सी लेता है,
दूध की मलाई से शुद्ध देसी घी बना लेता है, वो थोड़े में ही बहुत जी लेता है..

अपने दुपहिया वाहन को ही वो मर्सिडीज समझ लेता है,
सपरिवार चढ़ उस पर, जीवन का आनन्द लेता है.
छोटे से घर में सब सुख संचित कर लेता है, वो थोड़े में ही बहुत जी लेता है.

सीमित आय से भी काट-काट जोड़ लेता है,
खुले आसमानों में उड़ने के वो सपने देखता है,
फिर देख अपने पंख लघु-मन मसोस लेता है, वो थोड़े में ही बहुत जी लेता है.

चुनोतियाँ तो बहुत हैं जीवन में उसके, पर धीरज को पकड़े रखता है।
हठ करके जीवन भर संघर्ष कर बच्चों को नयी दिशाएँ देता है,
वो थोड़े में ही बहुत जी लेता है.
मध्यम वर्ग हर परिस्थिति में जी लेता है, खुशियों को पैबंद लगा कर सी लेता है
वो थोड़े में ही बहुत जी लेता है। वो थोड़े में ही बहुत जी लेता है।

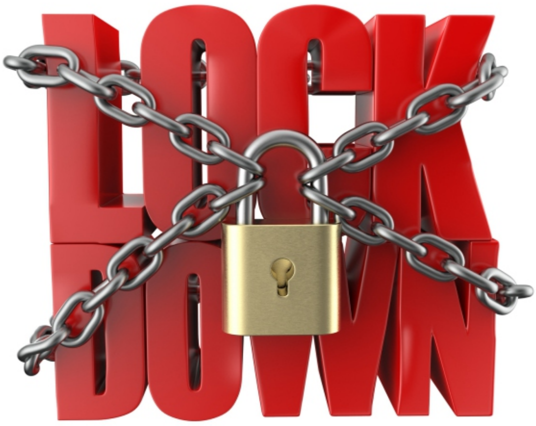

लॉकडाउन में लिखी कविता

भारत सिंह मीणा
अधीक्षक,सीमा शुल्क तूतीकोरिन

बुलंद इरादों से,
बुलंद इरादों से, अब यह लड़ाई लड़ी जानी है।
देखो कोरोना, भारत में तेरी शामत आने वाली है।।
चाहे पक्ष हो या विपक्ष हो....
चाहे पक्ष हो या विपक्ष हो, दोनों ने अब ठानी हैं
देखो कोरोना, भारत में तेरी शामत आने वाली है।।

चिकित्सकों नर्सों और पराचिकित्सा ने
चिकित्सकों नर्सों और पराचिकित्सा ने तेरे इलाज की ठानी है।
पुलिस, शासन, प्रशासन ,सीमा शुल्क और निगमों की
पुलिस, शासन, प्रशासन ,सीमा शुल्क और निगमों की 24 घंटे निगरानी है
देखो कोरोना, भारत में तेरी शामत आने वाली है।।

दान वीरों ने दान देने की,
दान वीरों ने दान देने की और सरकारों ने राहत देने की ठानी है
देखो कोरोना, भारत में तेरी शामत आने वाली है।।

धर्म के ठेकेदारों, पाखंडियों और जादू टोना वालों ने,
धर्म के ठेकेदारों, पाखंडियों और जादू टोना वालों ने चुप रहने की ठानी है।
देखो कोरोना, भारत में तेरी शामत आने वाली है।।
धर्म जात पाँत और क्षेत्र का भेद मिटाकर
धर्म जात-पाँत और क्षेत्र का भेद मिटाकर ,सेवादारों ने सेवा की ठानी है
देखो कोरोना, भारत में तेरी शामत आने वाली है।।

और जनता का कहना क्या ,
और जनता का कहना क्या, घर में रहने की ठानी है
देखो कोरोना, भारत में तेरी शामत आने वाली है।।
बुलंद इरादों से
बुलंद इरादों से अब यह लड़ाई लड़ी जानी है
देखो कोरोना, भारत में तेरी शामत आने वाली है।।

"आज़ादी के पूर्व और आजादी के बाद - सामाजिक सन्तुलन "

बी. सुरेश कुमार अधीक्षक,
सीमा शुल्क, तूत्तुकुडि

हमारे देश की करीब 5,000 वर्षों की एक विशाल एवं पौराणिक संस्कृति है। कई तरह के शासकों (विदेशी एवं स्वदेशी) ने हमारे देश पर राज किया है। राष्ट्रीय, धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्तरों पर कई तरह की उथल-पुथल हो चुकी हैं। अंग्रेज शासन 1600 ईसवी से लेकर 1947 ईसवी तक रहा और इसके कारण, भारत के सामाजिक सन्तुलन पर काफी असर पड़ा है। सदियों तक अंग्रेज शासन सहन करने के उपरान्त हमें 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली। आजकल हम स्वतन्त्रता का 75वाँ साल बड़े धूम-धाम से मना रहे हैं। आजादी के अमृत महोत्सव मनाने के इस अवसर पर, "आज़ादी के पूर्व एवं आजादी के बाद हमारा सामाजिक सन्तुलन कैसा रहा" - इस पर एक नजर डालना उचित होगा।

जैसे हम पहले बता चुके हैं कि किसी देश का सामाजिक सन्तुलन उस देश के निवासियों की जनसंख्या पर निर्भर होता है। भारत के विषय में भी यह सही है। वर्ष 1901 के बाद हमारी दशकीय जनगणना हुई थी जिसके अनुसार आजादी के पूर्व हमारी कुल जनसंख्या 36 करोड़ थी। जो बढ़कर वर्ष 1961 में 44 करोड़, 1971 में 55 करोड़ वर्ष 1981 में 69 करोड़ और वर्ष 1991 में 85 करोड़ तक जा पहुँच गई। वर्ष 2011 के सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार भारत की जनसंख्या 121 करोड़ पर थी जो पिछले साल 138 करोड़ पहुंच गई थी। भारत की सबसे अधिक आबादी वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जनगणना के अनुसार वर्ष 1901 में भारत का जनसंख्या घनत्व 77 था। जो वर्ष 1991 में बढ़कर 267 हो गया। 2011 में ये बढ़कर 382 हो गया। इससे साफ है कि हमारे जनसंख्या घनत्व में काफी वृद्धि हुई है।

भारत में लोगों की जन्म-दर, मृत्यु-दर तथा विकास-दर पर भी प्रकाश डालते हैं।

आजादी के पूर्व जन्मदर आमतौर पर 46 थी जो 2011 में 21 तक नीचे पहुंच गई। इसी तरह आजादी के पूर्व मृत्युदर 37 थी जो वर्ष 2019 में गिरकर 7.273 प्रति 1000 हो गई। आजादी के पूर्व भारत की विकास दर 9 प्रतिशत थी जो आजादी के बाद 2011 के विश्लेषण के अनुसार 17.64 प्रतिशत हो गई। वर्ष 2020 के विश्लेषण के अनुसार भारत की 138 करोड़ आबादी में करीब 52 % पुरुष हैं, और 48% महिलाएँ हैं। भारत में लिंगानुपात में भी कमी हुई है। केरला ही एकमात्र ऐसा प्रदेश है, जहाँ महिलाओं की जनसंख्या पुरुषों से अधिक है।

आजादी के पूर्व भारत के करीब 89 प्रतिशत लोग गाँव में तथा 11 % लोग शहरों में रहते थे। अंग्रेज शासको के आने से पहले, हमारे गाँव - आर्थिक, सामाजिक व अन्य स्तरों पर आत्मनिर्भर थे। अंग्रेज शासकों के शोषण के फलस्वरूप, हमारे गाँव की आत्मनिर्भरता नष्ट हो गई। गरीबी और बेरोजगारी बढ़ती रही। पूरा सामाजिक सन्तुलन बिगड़ गया। आजादी के बाद आज भी करीब 65 प्रतिशत लोग गाँवो में रहते हैं। ग्रामीण लोगों की उन्नति एवं विकास/ प्रगति के लिए सरकार ने कई तरह की योजनाएं बनाई हैं, जिनमें पंचवर्षीय योजनाएँ सबसे अग्रणीय हैं। इसके कारण किसान-मजदूर लोगों की हालत में भी काफी सुधार हो गया है। हरित क्राँति के उपरान्त, हम खाद्य पदार्थों की उत्पत्तिमें आत्मनिर्भर हो चुके हैं।आजादी के पूर्व भारत की जनसंख्या में सिर्फ 25% लोग साक्षर थे जो आज बढ़कर 69% हो गए हैं। साक्षरता प्रोत्साहन में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन जो वर्ष 1986 में गठित किया गया था, अहम भूमिका निभा रहा है। इसके अलावा, सरकार ने 'बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ" कार्यक्रम शुरु किया है, जो लड़कियों की शिक्षा के विषय में अमूल्य योगदान दे रहा है। तथापि बहुत कुछ करना बाकी है।

देश की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसके नागरिक होते हैं। सामाजिक सन्तुलन इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश के नागरिक कैसे रहते हैं। हाल ही में वर्ष 2020 में विश्व के करीब सारे देश कोविड विश्वमारी से ग्रस्त हो गए थे। भारत पर भी इसका काफी बुरा असर हुआ था। पहले चरण में इलाज के अभाव में काफी लोगों की मृत्य हुई, कई लोग बीमार पड़े, बेरोज़गार हो गये, जिससे उनकी कमाई बन्द हो गई लेकिन गर्व की बात यह है कि हमारा देश स्वदेशी टीका बनाने में कामयाब रहा है। कोवैक्सीन एवं कोवीशील्ड से लाखों लोगों का टीकाकरण हो गया है, और हो रहा है। कोविड विश्वमारी ने भी हमारे सामाजिक सन्तुलन पर बुरा असर पहुंचाया है, लेकिन टीकाकरण के कारण मृत्युदर में काफी गिरावट आई है। हमारे देश में कई तरह के लोग रहते हैं जिनका धर्म, भाषा, वर्ग, समूह सब अलग है। धर्म के आधार पर देखा जाय तो भारत में सबसे ज्यादा लोग हिन्दू धर्म के हैं, जो कुल जनसंख्या का 83% है। मुसलमानों की प्रतिशत करीब 12% है, और अन्य धर्म के लोग 5% हैं फिर भी भारत, एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। विभाजन के समय यहाँ साम्प्रदायिक दंगों की संख्या काफी बड़ी थी। आजादी के बाद उसमे काफी कमी आई है हालांकि कुछ घटनाएँ होती रहती हैं। आजादी के 75 साल बाद भी हम एकता और अखण्डता कायम रखने में सफल हुए हैं।

आखिरी विश्लेषण में हम यह कह सकते हैं कि आजादी के बाद हम कई क्षेत्रों में सामाजिक सन्तुलन बरकरार रखने में काफी हद तक सफल हुए हैं। लेकिन, हमारी बढ़ती हुई आबादी हमेशा चिन्ता का विषय है जिसके कारण आनेवाले वर्षों में हमारा सामाजिक सन्तुलन बिगड़ सकता है। अनुमान है कि वर्ष 2047 में हमारा देश विश्व की सबसे ज्यादा आबादीवाला देश बनेगा। बढ़ती हुई आबादी, बढ़ती हुई गरीबी, निरक्षरता, बेरोज़गारी तथा अन्य समस्याओं का मूल कारण है। इसलिए यह सबसे महत्वपूर्ण है कि हम आबादी नियंत्रण योजनाओं पर और ध्यान दें, ताकि हमारा सामाजिक सन्तुलन मज़बूत रहे जिससे हमारे देश की उन्नति, प्रगति और विकास हो सकता है।

जय हिंद

வெ.சுவாமிநாதன்,
உதவிஆணையாளர்,
திருச்சி.

பாமரமே உயர்வு

எல்லாம் மாறிவிட்டது. மாற்றங்களால் ஏற்பட்ட புதமையை மனம் ஏற்கிறது. ஆனால் பழைமையிலும் மனம் இருக்கத்தான் செய்கிறது. அகம், புறம் என்று பிரித்தால் புறமோ நிகழ்காலத்தை நுகர்கிறது. அகமோ முக்காலங்களிலும் இருக்கிறது. முக்காலத்தில் கடந்தகாலம் அடிக்கடி தென்படுகிறது. மனம் உள்ளவரை கடந்த காலம் அழிவது இல்லை. பசுமையான நினைவுகளும், கடந்த (இறந்த) காலம் தான். இன்று இல்லாததுதான். ஆனால் மனமோ அதையே மீண்டும் மீண்டும் அசைபோடுகிறது. பழைய ஏமாற்றங்களையும், அவமானங்களையும் எண்ணி எண்ணி குமுறுகிறது. "மறப்போம் மன்னிப்போம்" என்றுபலரும் முழங்கினாலும்,

மனிதமனம் பழைய வன்மங்களை அசைபோட்டு அசைபோட்டு அதற்கு உயிரூட்டுகிறது. கடந்த காலத்தை நினைப்பது மனித இனத்திற்கான சிறப்பு என்று நாம் கூறிக் கொண்டாலும் அது உண்மையிலேயே கொண்டாடக் கூடிய சிறப்பா என்பதுஆ ராய்ச்சிக்குரியதே.

கற்ற மாந்தர் சிந்தித்து செயல்படுவர் என்றுபலர் சிந்தனை செய்யும் போது அதில் பழைய நிகழ்வுகள் தான் ஆராயப்படும். எனவே "மறப்போம் மன்னிப்போம்" என்பது செயல் அளவில் ஏற்றுக் கொள்ளப்பட மாட்டாது. எல்லா முடிவுகளிலும் பழையகாலத்தின் தொடர்பு இருக்கும்.

பாமர மக்களுக்கு தற்கால நிகழ்வே பிரதானமாக இருக்கும். அவன் குறைந்து சிந்திப்பதால் அவன் பழைய தோல்விகளையோ, வன்மங்களையோ நினைப்பதில்லை. இயல்பிலேயே மறப்போம் மன்னிப்போம் அவனிடம் உள்ளது.

மிக்க சிந்தனை தந்திரத்தில் முடியும். கடவுளுக்கு தந்திரக்காரர்களைப் பிடிக்காது என்றுசிலமதங்களில் கூறுவதுண்டு.

பாமரத் தன்மை நன்றா? அன்றிசிந்திக்கும் தன்மைநன்றா? சிந்தனையாளர் பல செய்திகளை உள்வாங்கி முடிவெடுக்கத் தடுமாறுவது உண்டு. தற்காலத்தில் அதிக செய்திகளை கிரகிப்பதால் செய்திகளே பனிமூட்டமாய் (information smog) மாறிமுடிவெடுப்பதை குழப்புகிறது. பாமரத் தன்மையில், மேற்படிகுழப்பம் இல்லை. எனவே வன்மம் மறக்கமானுடம் சிறக்க சிலநேரங்களில் பாமரனாய் இருப்போம். அண்ணல் காட்டியவழியும் அதுவன்றோ.

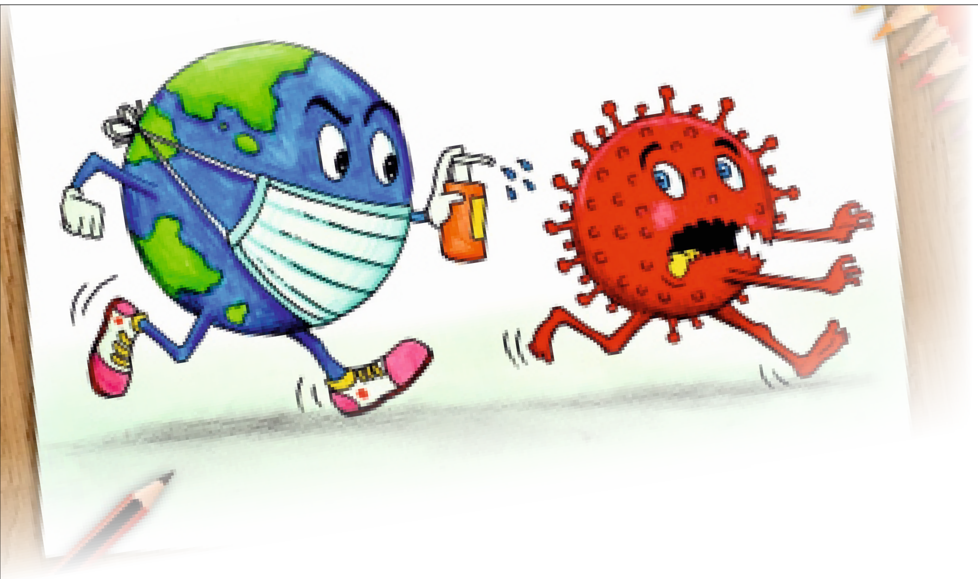

கொரானாவே போ !!!

Art & Poem By :

पी.एस. धनराज पाण्डियन
कर सहायक,
सीमा शुल्क गृह तूतुक्कुडि।

அழைக்காமல் எங்கிருந்தோ வந்து
எங்களை அலைக்கழிப்பதும், அழிப்பதும் ஏன்?
கொரானா உன் பெயர் என்ன?
எமனா?
உனக்கு பிடிச்சது மனித இனமா
மனித பிணமா
எங்கள் ஊரில் எமனுக்கும் கோயில் இருக்கு
குணமா சொல்கிறோம்
நீ இங்கு இருக்க வேணா

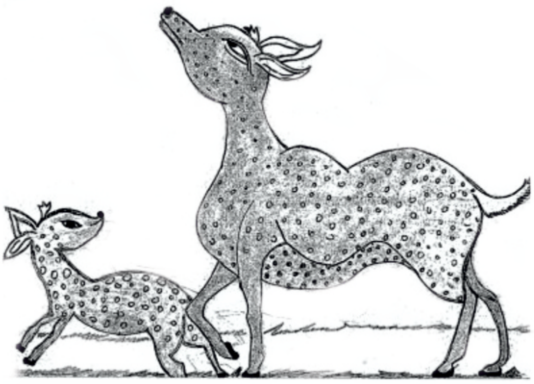

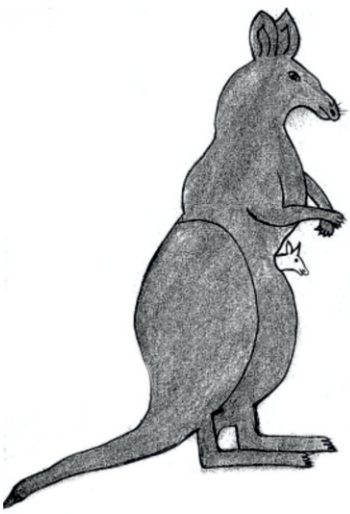

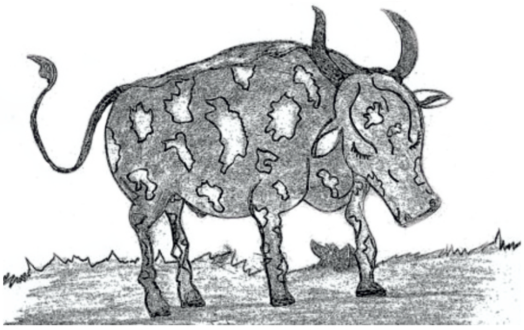

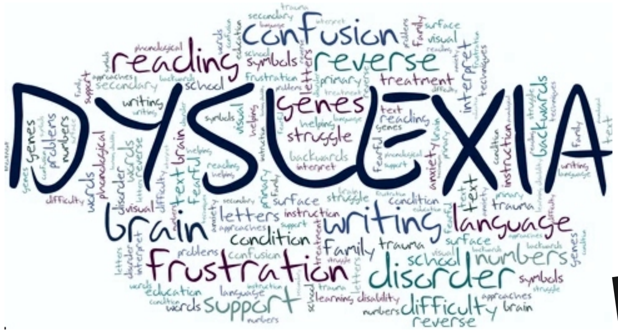

நவம்பர்-14

குழந்தைகள் தின பாடல்

பெற்றோரும், கற்றோரும், மற்றோரும் குழ்நதைகளை புரிந்து கொள்ள வேண்டும். அன்பு காட்ட வேண்டும். அவ்வாறெனில் வருடத்தின் ஒவ்வொரு நாளும் நவம்பர் பதிநாலே.

லிட்டில் டாம், லிட்டில் டாம்
பள்ளிக்குச் சென்றாராம்....
படிப்பில் கவனம் இல்லையென
ஆசிரியர் கடிதம் கொடுத்தாராம்....
கற்றல் குறைபாடு பிள்ளையிடம் என
டாமின் அன்னை உணர்ந்தாராம்.......
டாமை வாழ்த்தும் மடலென
அம்மா மாற்றிச் சொன்னாராம்......
.... **லிட்டில் டாம்**
டாமிற்கு புரியும் வண்ணம்
எளிமையாய் கற்றுத் தந்தாராம்.....
தாயின் அன்பு டாமின்
அறிவுக் கண்ணை திறந்ததாம்.......
ஆயிரம் முயற்சிகள் செய்து
உலகிற்கு மின் விளக்கை கொடுத்தாராம்.....
டாமின் கண்டுபிடிப்புகள் உலகில்
ஆயிரம் தாண்டியதாம்.........
.... **லிட்டில் டாம்**
தாயின் மறைவிற்கு பின்னொரு நாள்
கடிதத்தை படித்தாராம் ......
தாயின் வடிவில் தன்னுடன் வாழ்ந்த
தெய்வத்தை உணர்ந்தாராம்........
பெற்றோர் புரிந்துகொண்டால்
பிள்ளைகள் உலகை வெல்வார்கள்....
நாடே போற்றும் நல்ல
அறிஞர்கள் நமக்கும் கிடைப்பார்கள்.....
.... **லிட்டில் டாம்**
டாமாயிருந்த எடிசன்
நம் தாமஸ் ஆல்வா எடிசன்
பெற்றோர் புரிந்து கொண்டால்
பிள்ளைகள் எல்லோரும் எடிசன்
பெற்றெடுத்த உள்ளம் என்றும்
தெய்வம்......தெய்வம்.....

க. வெங்கடசுப்ரமணியன்,
கண்கணிப்பாளர்,
புள்ளியியல், சுங்கம், திருச்சி.

அக்கினிக்குஞ்சு

HAPPINESS CURRICULUM

ஒற்றைத்தீ
பற்றவை
அகிலம்முழுதும்தீ
பரவட்டும்! பரவட்டும்!

கேள்விவிதை
நட்டுவை
அறிவுவன(ள)மாய்
வளரட்டும்! வளரட்டும்!

கேள்விஞானம்
இளமையில்வேணும்
அதற்குபள்ளிகள்
முழுமையாய்உதவணும்

கையக்கட்டுவாயப்பொத்து
பழையபஞ்சாங்கம்
மனனம்செய்து
மதிப்பெண்பெறுவது
யாருக்குபிரயோஜனம்

பின்லாந்துபாடம்
மகிழ்ச்சியாய்படிப்பது
Happiness Curriculum
மனசுககுபிடிக்குது

Creativity Curiosity
Criticism Communication
Collaboration Compassion
Composure Citizenship

8C யையும் இணைத்தேபாரு
கல்வியில்முன்னேறும்
கலைமகள்நாடு ...

Exam Factoryய
மாத்திடுமாத்திடு
8Cயையும்
பாடத்தில்சேர்த்திடு

Happiness Curriculum
இங்கும்சாத்தியம்
மாணவர்ஆசான்
புரிதல்முக்கியம்

எட்டுதிக்கிலும்
கற்றதைச்சேர்க்கணும்
பள்ளிக்கல்வியை
பயனுறமாற்றணும்

Kum. S Shruta Kirti,
D/o B Suresh Kumar
Superintendent of Customs
Custom House Tuticorin.

NOTES OF HOPE...

(To myself and anyone who needs this
today)There are things
I'm learning each day
At times like
the calm after a storm
And the other times,
the storm itself
You're still a poet,
Even it's been more than a year
you've written something.
You're still a reader,
Even if you stumbled out of the path,
got lost in the intangible mess
Of growing up that it feels
Impossible to focus on a page.
You're a good lover,
Even if you don't have a partner
Even if what was intended good
Turned out messy.
You're beautiful,
Even if you don't
look like an Instagram Barbie.
Cause you're worthy
and valid by yourself,
even if you aren't like "that girl"
who drinks green juice
In a lavish home
Or an overachiever juggling
Through multiple endeavours
Always spending towards
The next milestone,
Bruising, too busy
to take note of speed bumps
and potholes,
Days filled with dread about hairfall,
crooked teeth
And an extra layer of fat
Around your belly
Beating yourself up
For a wasted day.
Productivity has become overrated
That in the process
You lose yourself sometimes.
So, it's okay
You're human.
You're not a burden.
You aren't wasting your time.
You don't have to prove anything.
Take a deep breath,
Look around you
and see what you've
not been noticing
for a long time.
Darling, you've been living
without an instruction manual
to the most complicated game
Life and if that isn't pretty awesome, I
don't know what is.

BE ALERT

G. Venkatasubramanian
Superintendent

Issue 1: In a operation code named "Molten Metal," D.R.I seized 85.53 Kg of gold worth about Rupees 42 Crore in an import consignment at the Cargo Complex of Delhi's Indira Gandhi International Airport. Modus Operandi: Gold smuggled in the form of machinery parts was being melted and moulded into bar/ cylinder shapes. In this case, sophisticated metallurgical techniques were used to convert the smuggled gold in the form of transformers laminations into bar/cylindrical form for further distribution.
Issue 2: On September 15, 2021 D.R.I seized 3000Kg of heroin estimated to be worth over Rupees 21,000 Crore at Mundra port in Kutch.

Modus Operandi: Heroin had been exported in the guise of "Talcum powder" from a company in Kandahar and shipped from Bandar Abbas Port in Iran to Mundra Port.
On verification, it was revealed that a resident of Chennai took GST registration in August 2020 in the name of XXXX Trading Company, with its declared location as Vijayawada They registered the trading company and obtained an Importer-Exporter Code from the DGFT. The online Indian yellow Pages mentioned that the business activity of XXXX Trading Company involves trading in fruits, vegetables, cereals, food grains and rice.

Techniques to be used to divert attention: The entities involved are making use of technology and shell firms to remain undetected. The company's address in certain cases was perhaps intended to divert the attention of the authorities from the location used for the transport and distribution of the contraband. In most cases, gangs involved make sure that the carrier is unaware of the contents of the package while smuggling the contraband/banned materials. In some cases, gullible persons fall into the trap for monetary benefits. Apart from these, courier and postal cargo have become the most frequent modes of transportation of narcotics / contraband by smugglers.

How to improve vigil: There needs to be co-ordination and cooperation between several agencies to effectively control the menace. Officers should ensure the receipt of Customs documents only from the importers/ CHA by verifying the possession of identity cards. 100% scrutiny should be made of import documents such as Invoice, Packing List, Country of origin Certificate, Bill of lading, Licences etc. 100% examination must be made in the case of imports from countries specifically mentioned. Necessary samples are to be drawn and sent to Lab for test purposes under Test Memo. CBIC should invest in container scanners and strategically deploy them in major and minor ports. Further, Artificial Intelligence enabled software and tech gadgets should be provided to officers who are deployed in these ports.

I, a woman

Kum. Shyamala Iyer,
D/o Smt. M. Rajarajeswari,
Assistant Director (OL)

The decade dances on top of a spinning wheel,
Hapless yet subliminal, in aspects unknown and unseen,
Prisoners confined to the bottom of a well, the silence screams,
Blindly classifying what's right and what's obscene
I stand here amongst men, I, obdurate and unclean,
Waiting for the day when conservatives are no longer seen,
'Embrace me and my women', I scream and cry,
Oh! But they do nothing but give me the eye,
I tell them I want to be the woman held high,
Not because I veil my chest from the devil's eye,
Rather be, at the end of the tunnel, a shining light,
For future women to not be in this plight

They tell me I'm bossy, I'm not brave?
I disagree, I'm a woman, not a slave,
I'm not fat, I'm not emaciated,
Don't tell me how you think I should behave,
A new pathway is what I want to pave,
You've confined me into this small space,
For decades, tricking me into believing it's not a cave,
I am a woman, and I will not stay inside,
I have found my way out and I know to fly,
No, I don't dress to impress,
I want to defend myself from what lurks,
What lurks in the alleys don't scare me,
Nor what is beyond the horizon at sea,
I can defend myself so let me be,
No, I'm not here to enjoy the high tea,
Don't tell me how to be and what not to eat,
I don't want to sit on the reserved seat,
I will not sit here, nod my head and agree
I deserve and I demand equality,
I have eluded the space in which you confined me,
Freedom and equality is what I want you to decree,
The vastness before me is mine to express and see.

A Cup of Coffee

N-Vakini Devi
D/o. A. Suganthi,
Head Havaldar

A group of alumni, highly established in their careers, got together to visit their old University professor.

Conversation soon turned into complaints about stress in work and life.

Offering his guests coffee, the professor went to the kitchen and returned with a large pot of coffee and an assortment of cups - porcelain, plastic, glass, crystal, some plain looking. some expensive, some exquisite - telling them to help themselves to the coffee.

When all the students had a cup of coffee in hand, the professor said:

"If you noticed, all the nice looking expensive cups were taken up, leaving behind the plain and cheap ones, while it is normal for you to want only the best for yourselves, that is the source of your problems and stress.

Be assured that the cup itself adds no quality to the coffee. In most cases it is just more expensive and in some cases even hides what we drink. What all of you really wanted was coffee, not the cup, but you consciously went for the best cups. And then you began eyeing each other's cups.

Now consider this: Life is the coffee, the jobs, money and position in society are the cups.

They are just tools to hold and contain life, and the type of cup we have doesn't define, nor change the quality of life we live.

Sometimes, by concentrating only on the cup, we fail to enjoy the coffee God has provided us. God brews the coffee, not the cups. Enjoy your coffee.

MORAL
"The happiest people don't have the best of everything. They just make the best of everything"

Live simply, Love generously.
Care deeply, Speak kindly.
Leave the rest to GOD.

सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि में श्री दिनेश के. चक्रवर्ती, आयुक्त, द्वारा सीमा शुल्क सुविधा केन्द्र का उद्‌घाटन

बाएं से दाएं श्री मुनिसामी, सहायक आयुक्त, श्री डब्ल्यू पॉल पीटर, सहायक आयुक्त, श्री दिनेश के. चक्रवर्ती, आयुक्त, श्रीमती वरलक्ष्मि एस. संयुक्त आयुक्त, श्री डी. दिनेश, सहायक आयुक्त

It's not the target nor the finish line that matters.
It's the way we advance towards the goal.

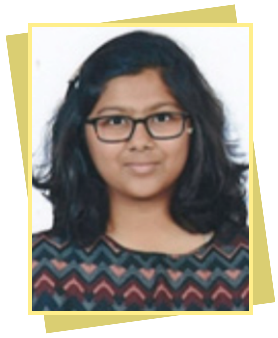

Natalia Rishma
D/o Shri D. Anil,
Commissioner of Customs

The art of Zanshin

Eugen Herrigel, a German professor, travelled to Japan in the 1920s to burgeon his knowledge of Japanese culture, ergo, he started training in Kyudo, the Japanese martial art of archery. He was taught by the legendary archer Awa Kenzo. Kenzo was a firm believer in teaching beginners the fundamentals before attempting to aim at a live target, and he took this approach to its extreme. Herrigel questioned Kenzo of his approach to which he simply replied "Come see me this evening."

That evening Kenzo proved he could hit double bullseye without the sense of sight. Blindfolded, the master archer was able to reproduce the exact sequence of internal movements that led to an accurate shot. This relation is known as Zanshin. The word Zanshin translates to a state of relaxed alertness, repeatedly emphasized in Japanese martial arts. It means to espouse living your life deliberately and purposefully rather than haphazardly succumbing to adversity.

We gravitate towards stationing de trop focus on whether or not the arrow reaches the mark because we live in a world bedevilled with performance. Throwing that fervour, focus and candor into the process—where we place our feet, how we grip the bow, how we exhale during the release of the arrow—then hitting the bullseye is simply a side effect.

The idea is to not be perturbed with hitting the target. It's to cascade into the monotony of doing the work and embracing each checkpoint of the process, to take the moment of complete awareness and travel forward. It's not the target nor the finish line that matters. It's the way we advance towards the goal. Everything is aiming. Zanshin.

Pencil Sketch by:

S Shraavan Kumar

S/o B Suresh Kumar
Superintendent of Customs,
Custom House Tuticorin...

Colourful art by...

पूर्विका मीना

पुत्री प्रेम कुमार मीना
अधीक्षक

तमिल मूल के कवि – श्री सुब्रमणिय भारती

பாரத நாடு

[ராகம்: ஹிந்துஸ்தானி தோடி]

பல்லவி : பாருக்குள்ளே நல்ல நாடு - எங்கள் பாரத நாடு

हिन्दी में अनूदित
– एम. राजराजेश्वरी,
सहायक निदेशक (रा.भा)

சரணங்கள்

1. ஞானத்தி லேபர மோனத்திலே உயர்
மானத்தி லேஅன்ன தானத்திலே,
கானத்தி லேஅமு தாக நிறைந்த
கவிதையி லேயுயர் நாடு- இந்தப் (பாரு)
2. தீரத்தி லேபடை வீரத்திலே -நெஞ்சில்
ஈரத்தி லேஉப காரத்திலே
சாரத்தி லேமிகு சாத்திரங் கண்டு
தருவதி லே யுயர் நாடு- இந்தப் (பாரு)
3. நன்மையி லேயுடல் வன்மையிலே-செல்வப்
பன்மையி லேமறத் தன்மையிலே,
பொன்மயி லொத்திடு மாதர்தங் கற்பின்
புகழினி லேயுயர் நாடு- இந்தப் (பாரு)
4. ஆக்கத்தி லேதொழி லூக்கதிலே-புய
வீக்கத்தி லேயுயர் நோக்கத்திலே,
காக்கத் திறல்கொண்ட மல்லர்தஞ் சேனைக்
கடலினி லேயுயர் நாடு- இந்தப் (பாரு)
5. வண்மையி லேயுளத் திண்மையிலே -மனத்
தண்மையி லேமதி நுண்மையிலே,
உண்மையி லேதவ றாத புலவர்
உணர்வினி லேயுயர் நாடு- இந்தப் (பாரு)
6. யாகத்தி லேதவ வேகத்திலே -தனி
யோகத்தி லேபல போகத்திலே
ஆகத்திலே தெய்வ பக்திகொண் டார்தம்
அருளினி லேயுயர் நாடு- இந்தப் (பாரு)
7. ஆற்றினி லேசுனை யூற்றினிலே -தென்றற்
காற்றினி லேமலைப் பேற்றினிலே
ஏற்றினி லேபய னீ ந்திடுங் காலி
யினத்தினி லேயுயர் நாடு- இந்தப் (பாரு)
8. தோட்டத்தி லேமரக் கூட்டத்திலே-கனி
யீ ட்டத்தி லேபயி ரூட்டத்திலே
தேட்டத்தி லேயடங் காத நிதியின்
சிறப்பினி லே யுயர் நாடு- இந்தப் (பாரு)

हिन्दी में अनूदित – एम. राजराजेश्वरी, सहायक निदेशक (रा.भा)

भारत देश

(राग : हिंदुस्तानी तोडी)

पल्लवी संसार में अच्छा देश – हमारा भारत देश

चरण

1. ज्ञान में, परम मौन में ऊँचे
मान में, अन्न दान में,
गान में, अमृत भरी
कविता में श्रेष्ठ देश यह (संसार)

2. धीर में, सैनिकों की वीरता में- दिल की
दया में, उपकार में
सार में, कई शास्त्र खोज
निकालने में श्रेष्ठ देश यह (संसार)

3. भलाई में देह बल में – संपत्ति
बहुलता में, वीरता में,
सुनहरे मोर समान स्त्री के पातिव्रत्य
की यश में श्रेष्ठ देश यह (संसार)

4. उपलब्धियों में, उद्योग प्रेरणा में, भुज
बल में, बुलंदहिम्मत में, रक्षा करने में
समर्थ मल्ल सेना- समुद्र में, श्रेष्ठ देश यह (संसार)

5. उदारता में मन सुदृढता में- मन के
शांत स्वभाव में बुद्धि तीक्ष्णता में
सत्य पर अडिग कवि
संवेदना में श्रेष्ठ देश यह (संसार)

6. यज्ञ में, तपस्या की लगन में –
योग में, कई भोग में,
मन में ईश्वर भक्ति रखनेवालों की
दया में श्रेष्ठ देश यह (संसार)

7. नदी में, झरने फौवारे में – मंद
पवन में, पर्वत पहाड़ में,
हल चलाने में, फलदायक गाय
नस्ल में, श्रेष्ठ देश यह (संसार)

8. बगीचे में घने पेडों में – फल
देने में फसल पोषण में
कमाई से परे निधि की
विशेषता में श्रेष्ठ देश यह (संसार)

हिन्दी में अनूदित
– एम. राजराजेश्वरी,
सहायक निदेशक (रा.भा)

तमिल मूल के कवि श्री सुब्रमणिय भारती

हिन्दी में अनूदित
– एम. राजराजेश्वरी,
सहायक निदेशक (रा.भा)

வேண்டுவன

மனதி லுறுதி வேண்டும்
வாக்கினிலே யினிமை வேண்டும்
நினைவு நல்லது வேண்டும்
நெருங்கின பொருள் கைப்பட வேண்டும்
கனவு மெய்ப்பட வேண்டும்
கைவசமாவது விரைவில் வேண்டும்
தனமு மின்பமும் வேண்டும்
தரணியிலே பெருமை வேண்டும்
கண் திறந்திட வேண்டும்
காரியத்திலுறுதி வேண்டும்
பெண் விடுதலை வேண்டும்
பெரிய கடவுள் காக்கவேண்டும்
மண் பயனுற வேண்டும்
வானகமிங்கு தென்பட வேண்டும்
உண்மை நின்றிட வேண்டும்
ஓம் ஓம் ஓம்

मांग

मन में दृढ संकल्प चाहिए
वाक् में माधुर्य चाहिए
चिन्तन अच्छा चाहिए
चाह की चीज हाथ लगनी चाहिए
सपना साकार होना चाहिए
जो मिलना है वह जल्दी मिलना चाहिए
धन और सुख चाहिए
धरणी में गौरव चाहिए
आँख खोलकर देखना चाहिए
कार्य में दृढ संकल्प चाहिए
नारी स्वतंत्रता चाहिए
परमेश्वर रक्षा करना चाहिए
मिट्टी उपजाऊ होनी चाहिए
आसमान इधर दिखाई देना चाहिए
सच सदा स्थिर होना चाहिए
ॐ ॐ ॐ

भारतियार के नाम से प्रसिद्ध श्री सुब्रमणिय भारती का जीवन काल 11 दिसंबर 1882 से 11 सितंबर 1921 तक था। आप तमिल भाषा के लेखक, कवि, पत्रकार और स्वतंत्रा संग्राम के सेनानी एवं समाज सुधारक थे। आधुनिक तमिल कविता के अग्रदूत थे। आपका माता-पिता द्वारा दिया गया नाम 'सुब्बैया' था। इन्हें संस्कृत, हिन्दी, तेलुगु, अंग्रज़ी , फेंच और अरबी भाषाओं का ज्ञान था। 11 वर्ष की आयु में इन्हें 'भारती' यानी सरस्वती देवी की कृपा प्राप्त, की उपाधि दी गयी थी। आप महाकवि भारती के नाम से जाने जाते हैं। इनकी रचनाएं देशभक्ति की भावना से भरी हुई हैं जिनसे प्रभावित होकर दक्षिण भारत में बड़ी संख्या में लोग आजादी की लड़ाई में शामिल हो गए। आप जाति व्यवस्था के खिलाफ भी लड़ते रहे।

'मांग' शीर्षक कविता में कवि, परमेश्वर से विभिन्न गुणों/ समृद्धि की मांग करते हैं।
"भारत नाडु (देश)" नामक कविता में कवि ने भारत देश की विशेषताओं और खासियत का चित्रण किया है। दोनों कविताएँ विख्यात गायकों द्वारा गायी जाती हैं और तमिलनाडु में लोकप्रिय हैं।

Venerable festivities: Games in the archaic society

Natalia Rishma
D/o Shri D. Anil,
Commissioner of Customs

Games in the past commonly had one purpose, entertainment. While active participation was encouraged and physical limits put to test, the mind had to undergo the rigorous procedure too. Ranging from Mancala to Chess and Senet, each had cultural and geographic diversity with a set of rules and sometimes came punishment. They formed an integral part of culture and brought people together, and also served the purpose of passing it on to future generations.

Being a common pastime to both the elite and the royalty, some games became common features of court culture and were also given as gifts. The royalty enjoyed games which were less harsh but regularly spectated. Opportunistic to ease political tensions and make peace by forming allies with countries and nations, it was always looked upon as a mediating and peaceful ground.

Games such as Senet and the Mesoamerican ball game were often imbued with mythic and ritual religious significance. Games like Gyan Chauper and The Mansion of Happiness were developed to inculcate spiritual and ethical meaning in the lives of the young, while Shatranj and WeiQi (Go) were recognized by the military and political elite as a way to develop strategic thinking and mental skill.

Human history and games are inextricably intertwined. Irrefutable evidence resounds down through the ages that fun and games are not frivolous pursuits per se- instead, they come naturally to us as pre requisite parts of being human. Through the understanding of games, we can conceptualize how we began to make intelligent choices. Simplicity is what's at the core of all games, and this is what our entire purpose of being alive boils down to. They arguably teach us lessons, good and bad, with hind and foresight of how an outcome will affect us.

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021

मंच पर आसीन बाएं से दाएं - श्री डी अनिल आयुक्त,
डॉ. उमा शंकर, मुख्य आयुक्त एवं श्री पी.इम्तियाज़ खान,
अपर आयुक्त

मुख्य आयुक्त,
डॉ. उमा शंकर पुरस्कार वितरित करते हुए।

आयुक्त, श्री डी अनिल,
पुरस्कार वितरित करते हुए।

अपर आयुक्त,
श्री वी.एस. वेंकडेश्वरन, पुरस्कार वितरित करते हुए।

हिंदी पखवाड़ा समारोह का
आनंद उठाते हुए
अधिकारीगण।

Shree Nakodaa
Trichy
Sivam
Shree Nakodaa
Veda Vidhya Printers, Srirangam. Cell : 94861 65309